वेदों में पर्यावरण संरक्षण की परिकल्पना

डॉ0 त्रिपुरसुन्दरी

वेद ज्ञान गङ्गा के उत्सव भारतीय संस्कृति के प्राणतत्त्व हैं। इनकी दिव्यता से समस्त भारतीय वाङ्मय प्रकाशित है। वैदिक ऋषियों ने अत्यन्त गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन के अनन्तर प्रकृति व मानव दोनों में सह अस्तित्व एवं साहचर्य सम्बन्ध का प्रकाशन किया है। वास्तव में मनुष्य का यह पंचभौतिक शरीर प्रकृति विनिर्मित है, प्रकृति ही मनुष्य की निर्माण सामग्री है, यही संधात्री है। पंचतत्त्वों में पृथ्वी, जल, वायु, गगन, अग्नि वनस्पति, औषधि, जलचर, खेचर, सरीसृप अन्यान्य कीट इत्यादि जन्तु, पालित पशु, अरण्य पशु, शिष्ट, निसर्ग से उत्पन्न वस्तु, इनकी समष्टि को ही पर्यावरण कहते हैं, पर्यावरण का तात्पर्य चारों–ओर का आवरण। इस तरह मानव–जीवन के सभी–तरफ से आवृत करने वाला प्राकृतिक परिवेश ही पर्यावरण है। कदाचित् इसीलिए वैदिक अध्ययन व्यवस्था में पाठ्य विषय मणियों की भॉति प्रकृतिसूत्र पर अवलम्बित प्रतीत होते हैं। ऋषियों की दृष्टि ने उसकी दिव्यता का अनुभव कर विशिष्ट ज्ञान का उद्भाव कर प्रकृति में देवत्व को स्वीकार किया और दैवत भावना से प्रकृति के उपादानों की उपासना की। वास्तव में प्रकृति प्रत्यक्ष देवता है।